# 16 एक और जन्मदिन

**हरिशंकर परसाई**

**( जन्म : सन् 1924 ई. : निधन : सन् 1995 ई. )**

हरिशंकर परसाई का जन्म जमानी, होशंगाबाद, मध्यप्रदेश में हुआ था। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। 18 वर्ष की उम्र में जंगल विभाग में नौकरी की। 1942 से मोडल हाईस्कूल में अध्यापन किया। 1952 में सरकारी नौकरी छोड़कर 1957 तक प्राईवेट स्कूलों में नौकरी की। 1957 से स्वतंत्र लेखन की शुरुआत की। जबलपुर से 'वसुधा' साहित्यिक मासिक पत्रिका का संपादन किया। उन्होंने कहानी, उपन्यास और निबंध भी लिखे, परंतु मुख्य रुप से कहानियाँ, उपन्यास, निबंधलेखन, मुख्यत्वे व्यंग्यकार के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने व्यंग्य मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज की कमजोरियों और विसंगतियों पर चोट करने के लिए लिखें साहित्य-अकादमी एवोर्ड-1995, भी उन्हें प्राप्त हुआ है।

प्रस्तुत व्यंग्य रचना उनकी 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ' संग्रह से ली गई हैं। 'एक और जन्मदिन' कहानी में जन्मदिन के बहाने उन्होंने अपने विचार व्यंग्य के साथ हमारे सम्मुख रखे हैं। इसमें उन्होंने समाज में व्याप्त दंभ की मानसिकता उजागर करते हुए जीवन के प्रति अपने अभिगम को उजागर करने का स्तुत्य प्रयास किया है। हमारा पाश्चात्य अंधापन अनुकरण हमारी भारतीय वास्तविकता को दंभ का आँचल ओढ़ाकर जीवन की, समाज की सच्चाइयों से विमुख कर देता है। जन्मदिन किसे और कैसे मनाना चाहिए, उसे व्यंग्य, हास्य-कटाक्ष के माध्यम से उजागर किया है।

---

मैं जन्मदिन छिपाता हूँ। पर गलती से एक किताब के फ्लैप पर मेरी जन्म-तारीख छप गई थी। कुछ लोगों को यह भेद मालूम हो गया। उस दिन सुबह एक प्रोफेसर साहब आए। वह गुलदस्ता लिए थे। उन्होंने मेरे हाथ में गुलदस्ता दिया और बोले, ''आज आपका जन्मदिन है!'' मैं सचमुच भूल गया था। भूल जाना भी चाहता हूँ। मैंने ऐसा कौन-सा पराक्रम कर दिया कि एक साल और जिंदा रहा। मैं तो अपने गुजर-बसर लायक कमा लेता हूँ, बस! कालाबाजार से भी सामान खरीद कर जिंदा रह लेता हूँ। मैंने कौन-सी जीवनी-शक्ति एक साल में बताई कि मुझे बधाई दी जाए। जन्मदिन की बधाई देना हो तो मेरे सामने के इन झोंपड़े वालों को दो, जो एक टपरी बनाकर रहते हैं। जमीन गीली है। साँप-बिच्छू निकलते हैं। इन्हें भरपेट खाने को नहीं मिलता। ये रोज मरने को होते हैं, पर मौत को जीत लेते हैं। ये एक साल और खींच ले गए, मरे नहीं, तो जन्मदिन की बधाई इन्हें देनी चाहिए। ये जीने की इच्छा को खाकर जीवित हैं। उसी में से प्रोटीन निकालते हैं। पराक्रम ये करते हैं कि साल पर साल निकलते जाते हैं, पर मरते नहीं।

तो एक ही आदमी गुलदस्ता लेकर आया। मैं दुखी हुआ। यह याद दिलाना क्या अच्छी बात है कि तुम्हारी उम्र एक साल और बढ़ गई। कोई यह बताए कि उम्र एक साल कम हो गई, तो बड़ा अच्छा लगे।

सोचा कि अखबार में छपवा दूँ कि परसाई जी ने अपना जन्मदिन बड़ी सादगी से मनाया। कंबख्त कोई आया ही नहीं, तो सादगी से मनाना तो मजबूरी ही हो गई! वह अध्यापक सुबह याद दिला गया तो दिन भर दिल विचलित रहा - अब कोई आया, अब आया! थोड़ा-सा खटका दरवाजे पर होता, तो मैं फौरन दरवाजा खोलता कि कोई माला-वाला लेकर आया होगा। पर देखता कि कुत्ते ने दरवाजे पर धक्का मारा था। कुत्ता खड़ा था। मैंने संतोष किया कि कुत्ते ने तो मेरे जन्मदिन का ख्याल रखा। यों जन्मदिन पर बधाई देने वालों में से आधों से ज्यादा कुत्ता ही अच्छा होता है। आदमी के मन में नफरत है कि साला अभी भी जिंदा है, मरा नहीं। पर ऊपर से हँसकर माला पहना रहे हैं। कहते हैं, 'सौ साल जियो!' सौ साल जी गया तो तुम्हारी खटिया खड़ी हो जाएगी। नहीं, मुझे ऐसों के हाथ से माला नहीं पहनना!'

एक मेरे बुजुर्ग मित्र हैं। दो महीने से कह रहे हैं, ''याद है हमें तुम्हारा जन्मदिन! बड़े ठाठ से मनाएँगे। कहीं बाहर मत चले जाना।'' पर उन्होंने भी कुछ नहीं किया। बात यह है कि वह पहली अप्रैल को पैदा हुए थे। जो 'अप्रैल फूल' के दिन पैदा हो, उससे यही उम्मीद की जा सकती है।

इनका जन्मदिन मनाने में हमें बड़ी तकलीफ हुई। हम अखबारों में सूचना छपाते, कार्ड बाँटते कि इनका जन्मदिन पहली अप्रैल को मनाया जाएगा। पर लोग आते ही नहीं। वे समझते कि अप्रैल-फूल बनाए जा रहे हैं। आखिर एक साल हम लोग लगभग सौ लोगों के पास गए और कहा, ''हम भगवान की कसम खाकर कहते हैं कि इनका जन्मदिन पहली अप्रैल को ही है। हम आप लोगों को बेवकूफ नहीं बना रहे। देखिए, बेचारे का क्या दुर्भाग्य है कि दुर्घटनावश

पहली अप्रैल को पैदा हो गया तो उसका जन्मदिन भी नहीं मनाया जा सकता। माना कि उसने जल्दी की। एक दिन बाद भी पैदा हो सकता था पर जो हो गया; सो हो गया। आप लोग इस बार जरूर आइए।''

लोग आए और उनका जन्मदिन मनाया गया।

एक नेता 29 फरवरी को पैदा हो गए। उनका जन्मदिन चार साल में एक बार आता है। वह हर साल 28 फरवरी को उदास रहते हैं, हाय-हाय करते हैं, ''क्या दुर्भाग्य है! एक दिन पहले पैदा हो जाता या एक दिन बाद! लोग हर साल वर्षगाँठ मनाते हैं और मैं देखता रह जाता हूँ।''

इधर पिछले साल से मेरे अभिनंदन की बात चल रही है। लोग कहते हैं, ''काफी साल लिखते हो गए, अब आपका अभिनंदन जरूर करेंगे।'' ये पेशेवर अभिनंदनकर्ता होते हैं। अभिनंदन करना एक धंधा भी होता है। चंदा जमा होता है। खाया जाता है। पास के एक शहर की घटना है। एक वयोवृद्ध समाजसेवी के अभिनंदन का आयोजन हुआ। कमेटी बनी। चंदा हुआ। अभिनंदन के समय देखा कि कमेटी के सदस्य चंदे की शराब पीकर बेहोश पड़े हैं। लोगों ने कहा, ''भई उठो, उनके अभिनंदन का समय हो गया।'' तो शराब में डूबे अभिनंदनकर्ता बोले, ''किस कंबख्त का अभिनंदन! वह नंबर एक का चोर है। भारत सेवक समाज का पैसा खा गया। उसका अभिनंदन हम करेंगे भला! अरे, हम तो खुद उसके नाम के चंदे से अपना अभिनंदन कर रहे हैं!''

यह अभिनंदन मुझे पसंद आया। श्रद्धेय समाजसेवी की उम्र इन लोगों की शुभकामनाओं से बहुत लंबी होगी। पर मैं बात कर रहा था अपने अभिनंदन की। अभिनंदन के उत्साहियों से मैंने पूछा, ''सिर्फ अभिनंदन-पत्र और प्रशंसा दोगे या और कुछ?''

वे बोले, ''क्यों नहीं? हम लोग द्रव्य-संग्रह करेंगे और आपको थैली भेंट करेंगे!''

मैंने कहा, ''ठीक है, अपना अभिनंदन-पत्र मैं खुद लिख लूँगा और छपवा लूँगा! इस झंझट में आप मत पड़िए। आप तो अधिक से अधिक मेरे नाम से पैसा एकत्र कीजिए। इसमें से 25 प्रतिशत आपका, बाकी मेरा।''

वे लोग परेशान हो गए। कहने लगे, ''आप कैसी बात करते हैं? हम आपका अभिनंदन करना चाहते हैं और आप हमारा ही अपमान कर रहे हैं। हम क्या पैसा खा जाएँगे?''

मैंने कहा, ''नहीं, मैं अपमान नहीं कर रहा हूँ। पर आप इतनी मेहनत करेंगे तो मेरा कर्तव्य है कि आपको मेहनताना दूँ। मैं मुफ़्त में अभिनंदन नहीं कराना चाहता।''

नतीजा बुरा हुआ। मेरे अभिनंदन की योजना अभी भी अधर में लटकी है। मेरी जबान ने मेरी थैली काट दी। कुछ लोग 'फिरकापरस्त' होते हैं, मैं 'फिकरापरस्त' हूँ। फिकरा जबान पर आ गया, तो निकल जाता है और उसके नुकसान मैं भुगतता हूँ।

मैं देखता हूँ, देश के भाग्यविधाता जन्मदिन पर गले मिलते हैं, गुलदस्ते भेंट करते हैं, माला पहनाते हैं। इन नेताओं की फोटो छपती है। ये भाग्यविधाता हैं। मैं भी इन लोगों के जन्मदिन पर शुभकानाएँ भेजना चाहता हूँ। पर वह इस तरह की होगी -

''आप एक साल और जीवित रहे। बड़ा कमाल किया। इस एक साल में आपने देश की अर्थ व्यवस्था को और गिरा दिया। बधाई! भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी, जमाखोरी को बढ़ने का मौका दिया। बधाई! आप चिरायु हों।''

पर 'मीसा' के डर के मारे मैंने अभी यह शुभकामना नहीं भेजी है। इनसे क्या कहा जाए कि देशवासी रो रहे हैं और तुम गले मिलकर हँस रहे हो!

पर अब मुझे अपना भी ज़ख्याल करना चाहिए। अगले साल दो महीने पहले से अखबारों के जरिये वातावरण बनाऊँगा कि फलाँ तारीख को परसाई जी का जन्मदिन है और पूरे देश में हलचल मची है।

तब कुछ ढंग का जन्मदिन मनेगा। वरना वही एक गुलदस्ता!

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**फलैप** किताब के पुट्ढे पर अलग से लगाया हुआ मोटा रंगीन पन्ना **भेद मालूम होना** रहस्य उजागर हो जाना, सच्चाई मालूम हो जाना **गुजर बसर लायक** गुजारा हो सके उतना **बधाई** अभिनंदन **टपरी** कुटिया, **पराक्रम** बहादुरी (यहाँ बहुत बड़ा काम), **कालाबाजार** मनमानी कीमत पर समानों के खरीदने-बेचने का कारोबार **टपरी** कच्चा छोटा घर, झोंपड़ी **विचलित** बेचैन, परेशान **बुजुर्ग** अधिक उम्रवाला, बूढ़ा **अभिनंदन** सम्मान **फिरकापरस्त** बोलने में चतुर-कुशलन **गुलदस्ता** फुलों का गुच्छा, **मीसा** अपराध नियंत्रण का एक कानून

## मुहावरे

**मौत को जीत लेना** विघ्नों को पार करना **इच्छा को खाकर जाना** मजबूरन जाना **प्रोटीन निकालना** जरूरी ताकत इकट्ठा करना **विचलित रहना** दु:खी होना **दिल विचलित होना** दु:खी होना, चिंतित होना **खटिया खड़ी होना** मुसीबत में पड़ना, संकट में पड़ना **अभिनंदन करना** स्वागत, सम्मान करना **श्रद्धेय** श्रद्धा, आदर से युक्त **अधर में लटकना** कार्य अधूरा होना, बातों में ही रहना **थैली काटना** आर्थिक नुकसान सहन करना **फिरकापरस्त होना** चिंतित होना, दगाबाज होना **पराक्रम करना** कोई बहुत बडा काम करना, **जीने की इच्छा को खाकर जीना** जीने की इच्छा न रहते हुए भी जीना **अप्रैल फूल बनाना** मूर्ख बनाना, **थैली भैट देना** धन देकर सम्मानित करना

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर दीजिए :**

(1) लेखक के जन्मदिन का भेद इस प्रकार मालूम हुआ कि...
- (क) बातों-बातों में ही मुँह से निकल गया था।
- (ख) गलती से एक किताब के फ्लैप पर उसकी जन्म तारीख छप गई थी।
- (ग) उसके माता-पिता ने सबको बता दिया था।

(2) खटका होने पर दरवाजा खोला तो...
- (क) प्रकाशक खड़ा था ।
- (ख) मित्र खड़ा था ।
- (ग) कुत्ता खड़ा था ।

(3) बुजुर्ग मित्र का जन्मदिन मनाने में तकलीफ हुई, क्योंकि...
- (क) मित्र विदेश गया था ।
- (ख) वह अचानक बीमार हो गया ।
- (ग) उनका जन्म पहली अप्रैल को हुआ था ।

(4) एक नेता 28 फरवरी को उदास रहते हैं; क्योंकि...
- (क) उनके संबंधी की मृत्यु हो गई थी।
- (ख) वह उसी दिन बीमार हुए थे ।
- (ग) उनका जन्मदिन चार साल में एक बार आता है ।

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**

(1) लेखक क्या भूलना चाहता है?

(2) बुजुर्ग मित्र ने लेखक से क्या कहा?

(3) अभिनंदन के समय कमीटी सदस्य किस स्थिति में थे?

(4) लेखक अगले साल कितने समय पहले जन्मदिन का वातावरण बनाने की सोचता है?

(5) लेखक ने पैसा एकत्र करनेवालों को कितने प्रतिशत देने की बात कही?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :**

(1) लेखक अपना जन्मदिन क्यों छिपाता हैं ?

(2) लेखक किसे बधाई देने को कहता है ?

(3) बुजुर्ग मित्र को जन्मदिन मनाने में तकलीफ क्यों हुई ?

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छ वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) जन्मदिन के बारे में लेखक के विचार स्पष्ट करें

(2) लेखक के जन्मदिन की योजना अधूरी क्यों रह गई ?

**5. आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) ये जीने की इच्छा को खाकर जीवित हैं।

(2) अभिनंदन करना एक धंधा भी होता है।

(3) कुछ लोग 'फिरकापरस्त' होते हैं, मैं 'फिकरापरस्त' हूँ।

**6. निम्नलिखित कथनों की पूर्ति के लिए दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :**

(1) लेखक दुखी हुआ; क्योंकि ...

(क) एक ही आदमी गुलदस्ता लेकर आया।

(ख) दरवाजे पर बहुत भीड़ थी।

(ग) गुलदस्ता लेकर कोई नहीं आया।

(2) हम भगवान की कसम खाकर कहते हैं कि ...

(क) आज हमारा जन्मदिन है।

(ख) इनका जन्म पहली अप्रैल को ही है।

(ग) आज इनका जन्मदिन नहीं है।

(3) अगले साल दो महीने पहले से अखबारों के जरिए ..

(क) जन्मदिन का वातावरण बनाऊँगा।

(ख) सगे-संबंधियों को सूचित करुँगा।

(ग) मित्रों की याद दिलाऊँगा

## योग्यता-विस्तार

**( 1 ) विद्यार्थी प्रवृत्तिः** अपने मित्र को जन्मदिन की बधाई देने के कार्यक्रम का आयोजन करें और उसका विवरण लिखें ।

**( 2 ) शिक्षक प्रवृत्तिः** हरिशंकर परसाई की अन्य हास्य-व्यंग्य रचनाएँ कक्षा में पढ़ें।